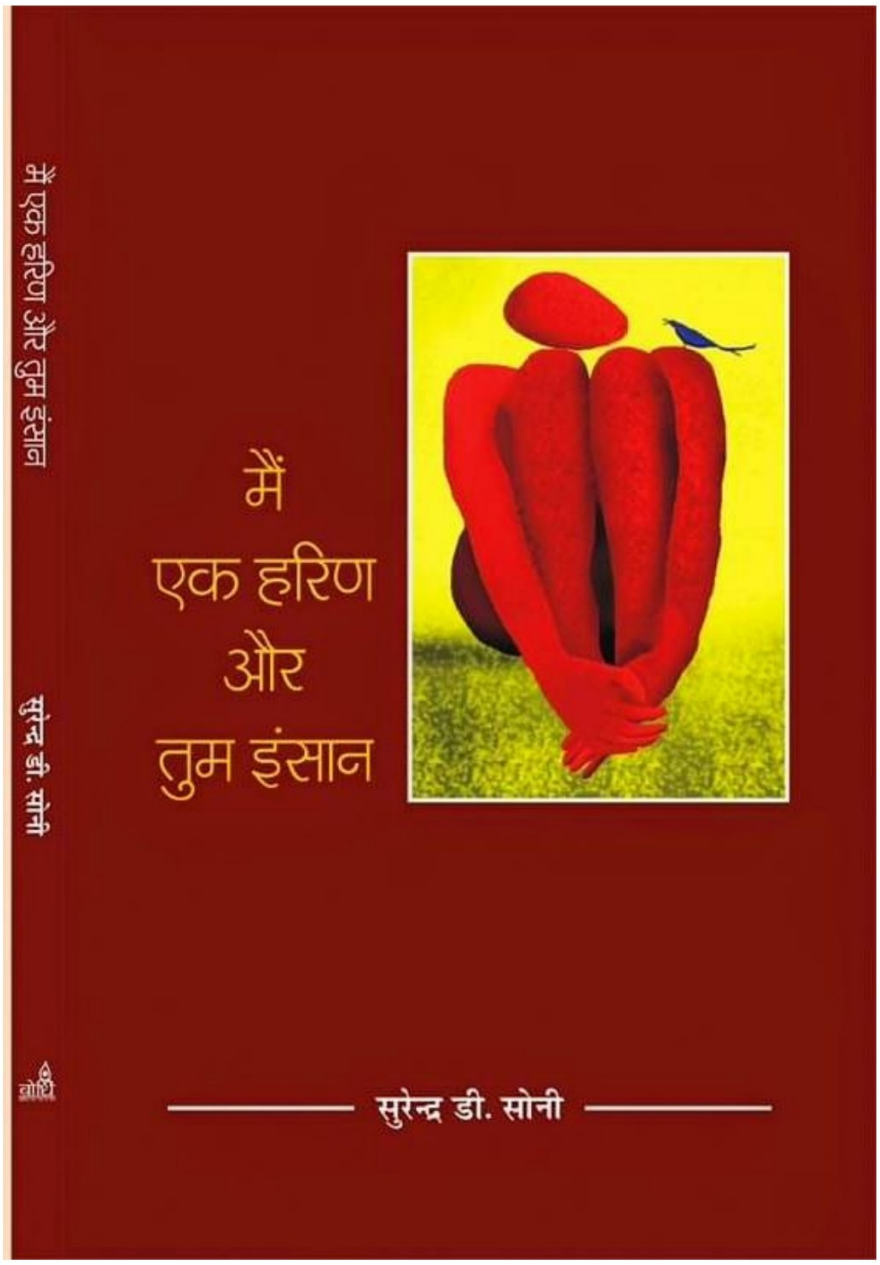

Scanned with CamScanner

मैं एक हरिण और तुम इंसान

(कविता-संग्रह)

सुरेन्द्र डी. सोनी

बोधि

Scanned with CamScanner

मैं एक हरिण और तुम इंसान : सुरेन्द्र डी. सोनी

बोधि प्रकाशन

© सुरेन्द्र डी. सोनी

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2013
ISBN : 978-93-82452-23-2
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : तरु टीम

बोधि प्रकाशन, जयपुर के लिए तरु ऑफसेट, जयपुर से मुद्रित एवं कार्यालय बोधि प्रकाशन, एफ-77
सेक्टर 9, रोड नं. 11, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006 से प्रकाशित।
दूरभाष : 0141-2503989, 98290-18087 ₹ 70/-

आवरण चित्रकार

सृजन सम्मान-1995, भोपाल (म.प्र.), कलारत्न-1998, बिहार एवं सृजन सम्मान-2003, रायपुर (छत्तीसगढ़) से सम्मानित कुंअर रवीन्द्र की अनेक कृतियां विविध पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों के आवरण पर प्रकाशित। कई एकल और सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी। संपर्क : 09425522569

Scanned with CamScanner

पिता को...!

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

आज भी देखा	9
कल फिर आ जाना	10
प्रश्न	11
व्यतिक्रम	12
सफ़र	13
लिखना क्यों	14
असर	15
बहुत काम है...	16
शनाख़्त	17
दाम्पत्य	18
चाबियाँ	19
तलवार	21
युद्ध-विराम	22
कमिटमेण्ट	23
चादर	24
वरेण्य	25
करवा चौथ	26
उपमेय	27
वध्या	28
मदर्स डे : फ़ेसबुक पर...	29
दोष	30
श्राप	31
ठाठ	32
पत्थर	33
प्रतिसाद	34
काग़ज़ आ...	35
शिवरात्रि	36
ताज़ा ख़बर	38
नमस्कार	39
नालियाँ	40
अनेक सदियों से...	41
नदी का थमेगा भटकना	43

Scanned with CamScanner

सुन तितली...
प्यार : प्रतीक्षा से अनुभव तक 45
आपका घर 48
नहीं हो सकती वह 50
पराकाष्ठा 51
बादल रीता... 53
थोड़ा-सा यहीं... 54
बिना शीर्षक के... 56
अतृप्ति 58
अन्तराल 59
तुम 60
एक झूठ 61
कुछ भी इम्पॉसिबल नहीं... 62
इसमें भी मेहनत कम नहीं... 64
हिस्से 66
मशीन 67
अपनी ज़मीन : अपनी छत 68
अग्निगर्भा! 69
है अभी शेष 71
आशीष के दो चुम्बन 72
पानी : पाकर तुम्हारा आलिंगन 74
मेरा कैशोर 76
किन्हीं और होंठों के लिए 80
फूल की पंखड़ी पर शूल 85
तुम मुझे एक बच्चे की तरह प्यार करो 87
अमावस 90
पटरियाँ 92
ईश्वर के नाम पर 94
क्यों चाहिए शब्द... 97
सितार 103
कि खोता कुछ नहीं... 108
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है 110
सेज़ 115
द्रोण का प्रायश्चित 118
मैं एक हरिण और तुम इंसान 123
चवन्नियाँ 129
134

Scanned with CamScanner

भूमिका

हरिण दौड़ता है...कभी बेलाग...कभी बेतहाशा..। कभी कुलांचे भरता, अपनी मौज में, कभी प्राण बचाने को प्राण निचोड़कर पैरों में लिए हुए..। दौड़ना उसकी नियति है, विवशता भी, आनंद भी और व्यथा भी...। सुरेन्द्र डी. सोनी की कविता इसी दौड़ की कविता है। उनके अपने मन की कविता, जिसे मन से कहा गया, मन में रचा गया। कविता के होने और बचे रहने की चिंता से शुरू करके कवि जीवन की उन तमाम गलियों में टेर लगाता आया है, जहां भी उसके मन का हरिण उसे ले जाता है अपने पीछे-पीछे। ये जीवन से भरपूर गलियां हैं कहीं, सूखे कुएं-बावड़ी और कीचड़ भरे रास्ते भी हैं यहां...कवि किसी से बचता नहीं, किसी से कन्नी नहीं काटता...। जीवन का हर वह रूप जो कवि को दिखता है, वह उसे निहारता है, उसे स्वीकार करता है और सतत अपना बनाते जाने की प्रक्रिया के बाद व्यक्त कर देता है। इस क्रम में कितने ही अप्रिय क्षण आते हैं, जिन्हें कहना अपनी ही निजता को उधेड़ना है पर सुरेन्द्र इसे इस सहजता से कह देते हैं बिना किसी विचलन के...।

रचनाकार यह भी जानता है कि अनुभूति जब अभिव्यक्ति के स्तर पर आती है तो उसके अर्थ खो बैठने का खतरा कम नहीं है। कागज़ उसकी बात का कफ़न ना बने, कहीं उसके भीतर का तूफान कागज़ पर आकर दम ना तोड़ दे। यह अभिव्यक्ति की चिन्ता मात्र नहीं है, उस गहरे संकट का व्यक्तव्य भी है जो मौजूदा समय में कविता के पूरे परिदृश्य में छाया हुआ है। कविता कब संकट में आती है, यह जानना तभी संभव है जब कविता के सरोकार साफ हों। सुरेन्द्र डी. सोनी निजी पीड़ाओं के कवि नहीं हैं, वह निजी पीड़ा के बहाने पूरे सामाजिक ताने बाने को टटोलते हैं। दाम्पत्य के बीच दरकते विश्वास को संकेतों मे कहते हैं कभी बरसों पुराने राज भरी अदालत में खोल देते हैं- *'जज साहब ने कहा/सबूत लाओ/दोनों के वकीलों ने/चाबियां निकाल-निकालकर/जज साहब की मेज पर रख दीं'*

...इस तरह संबंधों के सारे समीकरण सुलझे भी तो एक नए उलझाव के साथ। यह उलझाव कवि का असमंजस नहीं, समाज की विडम्बना है जो किसी एक निर्णय के साथ खत्म नहीं होती, बल्कि एक स्तर पर मिटाई जाकर, अनेक स्तरों पर शुरू हो जाती है। यही

Scanned with CamScanner

वजह है कि रचनाकार अपने लिखने के कारण में गिनाना नहीं भूलता- *'हां लिखता हूं/इस दिल की बेचैनी को/कभी बुझाने के लिए/कभी भड़काने के लिए...।'*

दिल की बेचैनी सिर्फ सामाजिक रिश्तो के बिखरने तक सीमित नहीं, वह जीवनानुभूतियों के विस्तार में उन सबसे प्रभावित है जिसमें प्रेम है, मित्रता है, स्त्री का मन है और सभ्यता के वे सब पड़ाव हैं, जहां आकर वह हमेशा या कि कहें बार बार ठिठक जाती है। संस्कृति और सभ्यता के बीच की टकराहट बहुत स्थूल नहीं है इसलिए कविताओं में यह दो पंक्तियों के बीच की खाली जगह में पढ़ी जा सकती है- *'ओह, गाड़ी तो बहुत लेट है/भीड़ से दूर जाकर/नए दोस्त बनाएं/अगर चल रहा नेट है...।'*

नए युग ने वह सब बनाया, जो दूरियां मिटा दे... और वह सब भी पैदा किया जो दूरियों पर ही टिका है...एक ओर से लकीर बनाते जाने और दूसरी ओर से मिटाते चलने पर यह यात्रा कहां जाकर ठहरेगी, कहना मुश्किल है। नेट पर हजारों हजारों नए दोस्त बन गए...और जहां जिस घर में साथ थे हम एक परिवार के लोग...उनके बीच भींतें खड़ी हो गई। हर दीवार इन्सानियत का बंटवारा है, हर दीवार एक व्यक्तव्य है नई दुनिया के भीतर की सच्चाई को परत दर परत खोलता। सुरेन्द्र डी. सोनी का कवि पुराने और नए के द्वन्द्व को पहचानकर चुप नहीं रहता, उसे आवाज देता है, खोलता है और बदलने की चुनौती देता है- *'मशीन तुम्हें सिखा रही होगी जीना...मैं तो इसमें मरने की/ सहूलियत देखता हूं...।'*

भोला है कवि का मन...भोला न होता तो भला कवि-मन कैसे होता...। हरिण जैसा मन...दौड़ता है पर हमेशा मरीचिका में नहीं...कभी कभी सयाना होकर भी...अभयारण्य भी उसे अभयदान नहीं दे सकते तो दौड़ने के सिवा उसके पास विकल्प ही कहां...। यह विकल्पहीनता हर उस व्यक्ति का हश्र है जो मौजूदा व्यवस्था का भ्रष्ट अंग होना स्वीकार नहीं कर रहा..। अपने ग्राम्य जीवन की सहजता से परे होकर थोपी गई महानगरीय चाल को झेलता हुआ व्यक्ति कहां से चला है, यह तो जानता है, अपनी जड़ें वह भूला नहीं है लेकिन पहुंचेगा कहां, उसे नहीं पता...उसे ही क्या, किसी को भी नहीं पता...। सुरेन्द्र डी. सोनी की संवेदना का बहुफलकीय रचना संसार इन कविताओं में झलक भर को ही सही, दिखता जरूर है। एक बिन्दु कैसे अपना गोला बनाता है और खुद इस गोले में घिरा दौड़ता है, यह सूक्ष्म प्रस्थान बिन्दु है उनका। कम शब्दों में पूरी कविता कहना वैसा ही है जैसे एक बिन्दु में वृत की गोलाई माप लेना, यह काम बखूबी कर पाए हैं वह...। अनंत शुभकामनाएं इस संभावनाशील रचनाकार के प्रति...।

-मायामृग

Scanned with CamScanner

आज भी देखा

बहुत-से तूफ़ानों को
देखा मैंने
तोड़ते हुए दम
क़लम की नोक पर

आज भी देखा
एक तूफ़ान
मरा पड़ा धरती पर

काग़ज़ बन गया
क़फ़न जिसका..!

——

Scanned with CamScanner

कल फिर आ जाना

वे और होंगे
जो रात के किसी पहर में
आँख लगने के इन्तज़ार में
कहते हैं
कि ज़िन्दा रहेंगे
तो कल तुझे देखेंगे

हाँ, यह मैं हूँ..
मैं
जो रात को
मलकर अपने बदन पर
हठ करती नींद को
दबाकर तकिए के तले
कहता हूँ तुझे
कि मुझे देखना हो
तो कल फिर आ जाना
सूरज !

——

Scanned with CamScanner

प्रश्न

कौन फेंकता है
पत्थर
मेरे मौन में...

कौन चाहता है
मेरा
आवाज़ हो जाना...

कौन चाहता है
शोर
व्यवस्था के
इस जलते जंगल में...

पूछते हो कौन..?

स्वयं के अतिरिक्त
कब
किसने
उठाया है प्रश्न
अपने पुंसत्व पर..?

——

Scanned with CamScanner

व्यतिक्रम

भींतें ही भींतें खड़ी करके
छतें बनाईं तो क्या
दरूजे बनाए तो क्या...

कल
जब प्रलय आएगा...

लम्बी ख़ामोशी के बाद
खण्डहरों के बीच
बची रह गई
उदास चौखटों के अवशेषों से
सिर भिड़ाएगा आदमी...

फिर से
भींतों में क़ैद होने को
विवश हो जाएगी सभ्यता !

———

Scanned with CamScanner

सफ़र

सफ़र
नंगा होकर
नाचने लगा
बीच सड़क -

मुसाफ़िरों के चेहरों पर
खीज
अच्छी नहीं...!

———

Scanned with CamScanner

लिखना क्यों...

हाँ, लिखता हूँ...
इस दिल की बेचैनी को
कभी बुझाने के लिए
कभी भड़काने के लिए..!

——

Scanned with CamScanner

असर

गोदाम में से
एक सर्प तो निकाले -
छोड़ दे...
तो उसने मेरा लिखा पढ़ा !

—

Scanned with CamScanner

बहुत काम है...

व्यस्तता -
हमारा ओढ़ा हुआ झूठ...

इतना भारी
कि उसके नीचे दबकर
मरा तो जा सकता है
लेकिन
उसे उतारकर
एक ओर रखा नहीं जा सकता...

बहुत काम है भाई..!

——

Scanned with CamScanner

शनाख़्त

सिर्फ़ यह जानने के लिए
गुमनामी में मरना ज़रूरी नहीं है मेरे दोस्त
कि तुम्हारी शनाख़्त के लिए कौन-कौन आता है...

तुम्हें यह भ्रम कैसे हो गया
कि इस नामवरी में लोग तुम्हें पहचानते हैं..!

——

Scanned with CamScanner

दाम्पत्य

रात की कोख से
उठता है धुआँ...
रोज़ ही रह जाता है कुछ
अधजला-सा !

—

Scanned with CamScanner

चाबियाँ

दिलों के राज़
हमने पहली रात ही साझा कर लिए थे -

चाबियाँ बदल ली थीं
इस वादे के साथ
कि प्यार में विश्वास ही सबसे बड़ी चीज़ है
इसलिए इन चाबियों को
पूर्णिमा की रात
दोनों अलग-अलग चाँद की तरफ़ उछाल देंगे...

कुछ बरस तक
सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा
इस विश्वास पर
कि दूसरे ने वे चाबियाँ चाँद की तरफ़ ज़रूर उछाल दी हैं...

कुछ और बरस बीते -
बच्चों के साथ-साथ हमारे अहं भी बड़े होने लगे...

झगड़े बढ़े और बढ़ते ही गए...

अदालत में तमाशा हुआ
तलाक़-मुआवज़े माँगे गए...
बरसों पुराने राज़ खोले गए...

Scanned with CamScanner

जज साहब ने कहा कि सबूत लाओ...
दोनों के वक़ीलों ने
चाबियाँ निकाल-निकालकर मेज़ पर रख दीं..!

——

Scanned with CamScanner

तलवार

तुम्हारी बाँदी नहीं हूँ मैं
कि चुम्बन का प्रत्युत्तर
चुम्बन से दूँ...

एक क्षण की इस तलवार ने
आधी सदी के आलिंगन का सिर काट दिया..!

——

Scanned with CamScanner

युद्ध-विराम

तुम्हारे हाथ में
कब था
गोली न चलाना...
युद्ध-विराम तो मेरी तरफ़ से है -

प्यार
ऐसे ही निभाया जाता है...!

——

Scanned with CamScanner

कमिटमेण्ट

अपने फ़ोन की
सारी काल डिटेल्स को करके डिलीट
चढ़ता हूँ
घर की सीढ़ियाँ...

तुम
भरपूर मुस्कान के साथ
जैसे ही मुड़ती हो किचन में...
झपटता हूँ
तुम्हारे फ़ोन पर..!

——

Scanned with CamScanner

चादर

दीवार के पीछे भी
तुझे
प्यार करना न आया -

बत्ती बुझाकर
आज भी
वही चादर अँधेरे की ओढ़ ली

शिट्ट !
कब तक बनी रहोगी
'इण्डियन'...?

——

Scanned with CamScanner

वरेण्य

बीस बरस तक
गर्म रेत पर सुलाकर
ठूँसते रहे
अपना जिस्म मुझमें -
अब कहते हो
कि मैं रेगिस्तान हूँ...

राख होने तक
झेलूँगी तुम्हें...
मैंने तुम्हारा वरण किया है
तुम्हारे झूठ का नहीं !

——

Scanned with CamScanner

करवा चौथ

सारे दिन
भूखी-प्यासी रहकर
इस बार भी
महकती आँखों से
उसने चाँद देखा मुझमें...
और मैं भी
हमेशा की तरह
अपनी भूख और प्यास से घिरकर
पड़ोस की छतों पर
दमकते चाँद देखता रहा !

Scanned with CamScanner

उपमेय

कालिदास से लेकर अब तक
चाँद से इतनी बार ढका है
तुमने मेरा चेहरा
कि मैं ग्रहण की शिकार धरती-सी
जान ही न पाई अपना चेहरा...

उपमाएँ कितनी बेरहमी से
ख़त्म कर देती हैं उपमेय का सौन्दर्य..!

——

Scanned with CamScanner

वध्या

यह स्त्री के प्रति
हमारे आदिम संस्कारों का संघर्ष ही है
कि पति होने के नाते
मैं उस पर कब्ज़ा जमाना चाहता हूँ
और बाप होने के नाते
तुम अपना कब्ज़ा हटाना नहीं चाहते...!

———

Scanned with CamScanner

मदर्स डे : फ़ेसबुक पर

तुम्हारा यह 'मदर्स डे'
तीन सौ चौंसठ दिनों को भारमुक्त करने की एक
सुविधा का नाम है
या किसी पोस्टर-प्रतियोगिता का भव्य आयोजन..?
यह प्रश्न पूछने की
इस फ़ेसबुकिया गुस्ताख़ी करने के बदले मुझे क्या
सज़ा देने जा रहे हो दोस्तो....

वैसे मैं आप ही की गौरव-भूमि से बोल रहा हूँ
जहाँ आज तक किसी माँ ने
अपनी सन्तान के लिए कोई ख़ास दिन फ़िक्स नहीं
किया है...!

———

Scanned with CamScanner

दोष

फल मिला
तो मैं स्वयं मेरा उत्पाद -
विफल हुआ
तो बीज ही ख़राब था...!

——

Scanned with CamScanner

शाप

तुम्हीं कर गए मुझे
बदनाम इतना
कि तुम्हारे कफ़न के भीतर से
मुस्कराता हुआ
एक झूठ निकला बाहर
और मँडराकर
एक-एक चेहरे पर
कुछ कहता रहा...
जबकि
मेरे आँसुओं की लड़ी से
टूटकर गिरे
बहुत सारे सच
सिसकते हुए
परिक्रमा ही करते रहे
तुम्हारे शव की...!

——

Scanned with CamScanner

ठाठ

मन्दिर में आया है
तो देख
ज़माने के ठाठ -

आँख ही जो मूँदनी थी
तो घर क्या बुरा था...?

———

Scanned with CamScanner

पत्थर

हैरानी में घिरा
देखा तेरा भगवान
जो क़ैद होकर दीवारों में
पलक झपकने से गया..!

———

Scanned with CamScanner

प्रतिसाद

बर्फ़ हो गई
हथेलियों को
रगड़ते निकला
वह मन्दिर से -

याचना का
यह प्रतिसाद
कि मुट्ठी में ज़मा
गरमी को
खोकर आया..!

——

Scanned with CamScanner

काग़ज़ आ...

काग़ज़ आ
कि क़लम से झरती
लपटों से
फूँकूँ
तुझमें प्राण -
फिर
ध्वज बनकर
तू लहरा -
मस्तक
भुजाएँ
जंघाएँ
चरण
सब अंग जला आ
उस वहशी के
जिसने
इस सुन्दर धरती को
बना दिया
कलह का कारख़ाना !

——

Scanned with CamScanner

शिवरात्रि

तुम्हारा दोष
कैसे कह दूँ
पशुपति
तुमने तो
ख़ुद को गढ़ा नहीं

हमने ही
बनाया देवता
तुम्हें काम का

हमने ही
तय की तिथि
तुम्हारी प्रणय-रात्रि की

हमने ही
रचे मंत्र
तुम्हारे अभिषेक के

हम ही
माँगते रहे वरदान
चिर यौवन का...

इस बार भी
वरदान के पिपासुओं ने
ख़ूब मनाई

Scanned with CamScanner

तुम्हारी प्रणय-रात्रि

तुम्हारे मन्दिरों के बाहर
नालियों में
बहता देखा
ख़ून मैंने
निरीह पशुओं का

लोग
जिसे दूध कहते रहे..!

—

Scanned with CamScanner

ताज़ा ख़बर

रोज़ ही उबाकें
रोज़ ही उल्टियाँ ख़ून की

हाँफती सुबह का
रोज़ ही बैठ जाना सिर पकड़कर नाली के पास -

अख़बार !
तुम आओ कि न आओ
तुम्हारी दुर्गन्ध आ ही जाती है..!

—

Scanned with CamScanner

नमस्कार !

साहब का
प्रत्युत्तर देना
ज़रूरी नहीं -
ज़रूरी है
तुम्हारा नमस्कार करना...

साहब ने
अपने साहब से
यही सीखा है !

——

Scanned with CamScanner

नालियाँ

पानी कैसे जा सकता है अपने रास्ते...
अच्छे पड़ोसी हो ना तुम लोग -
मंत्रीजी की कोठी का ख़्याल रखना तुम लोगों की ज़िम्मेदारी है

अपने-अपने पानी को समझाकर रखो...!

——

Scanned with CamScanner

अनेक सदियों से...

सभ्यता के प्लेटफार्म पर खड़ी -
बेचैन-सी ये दुनिया
बार-बार देखती है
टीनशेड से लटकी हुई घड़ी

ओह ! गाड़ी बहुत लेट है -
भीड़ से दूर जाकर
नए दोस्त बनाएँ
अगर चल रहा नेट है

नमस्कार, कृपया ध्यान दीजिए -
इस घड़ी को देखने
और सिस्टम को कोसने का
मज़ा लीजिए

खड़े रहिए या पड़े रहिए -
बहस कीजिए
और अपनी बात पर
अड़े रहिए

ग्लोबलाइजेशन का स्वाद चखिए -
जीने के लिए
ज़रूरी है
कि स्वयं को गिरवी रखिए

Scanned with CamScanner

नई सदी के ये ही तो रंग हैं -
सैलफोन और लैपटोप
दोनों
शरीर के अविभाज्य अंग हैं

लड़ते रहिए, भिड़ते रहिए -
कुछ करिए मत
नेताओं से
सिर्फ़ चिढ़ते रहिए

कभी लाइका और कभी डॉली यहाँ 'पेट' है -
इसीलिए
ख़ुशी की गाड़ी
अनेक सदियों से लेट है..!

———

Scanned with CamScanner

नदी का थमेगा भटकना

सीता को
किसने दिया था हँसने
किसने सुना था
उसके मौन को

एक नदी ही थी
जिसने जाना उसे

तभी तो
भटकती है वह
आज भी
पगली-सी

घण्टियाँ
अजानें
मन्दिर
मसजिद
न हों अगर...
दूत
बिचौलिए
सब छोड़ जाएँ अयोध्या
तो वहाँ की
गलियों में खेलते
बच्चों के साथ मिलकर
ढूँढ़ ही लेगी वह

Scanned with CamScanner

सीता को

नदी का थमेगा
अगर भटकना
तो गूँगी अयोध्या भी
होगी मुखर..
देखना एक दिन !

—

Scanned with CamScanner

सुन तितली...

उपेक्षा पौरुष की
बहिष्कार ख़ुशबू का
नकार झुकने से -

कर सकती हो
यह सब तुम
तितली..!

कोई वरदान नहीं
फूल के पास
कि वह झेल जाए
तुम्हारा विरोध..

प्यार तो
उसका भी जाएगा..
फिर तुम्हारा
तितली होना
किसको भाएगा...

कितनी आसानी से
कह दिया तुमने
कि आज़ादी
मेरा भी हक़ है...

Scanned with CamScanner

क्या इस बग़ीचे में भी
होती है बैठकें
तितली आन्दोलन की..?

ममता के
इन्द्रधनुष पर
चढ़ आया है कोई रंग
विमर्श का शायद...

तर्क के रंगरेज ने
ख़ूब रँगा है काला
गुलाबी था
जो दुपट्टा तुम्हारा...

करुणा का करके क़त्ल
हृदय जा बैठा है
बुद्धि के द्वार..

तितली..!
तुम क़ैद हो गई लगती हो
तितलियों के ही
किसी बाड़े में...

बाड़ा -
जो चला रहा है
अपना अलग ही
नक्सली आन्दोलन...

एक नया ग़दर
एक नया विप्लव

Scanned with CamScanner

एक नई सत्ता का
आसुरी स्वप्न...

इस नई चुनौती का
अंजाम सोचा है
तुमने तितली..?

एक आरोपित बन्ध्याकरण को
झेल सकोगी तुम..?
तितली...!

———

Scanned with CamScanner

प्यार : प्रतीक्षा से अनुभव तक

प्रतीक्षा -
जैसे सीने से उठती भाप
ना कहेगी, हाँ कहेगी
या कुछ न कहेगी...
कौन ?
जाने आशाओं के महल का दरबान

आँखें -
जैसे घनीभूत दो बादल
बरसना है चुपचाप जिन्हें
आँचल के भीतर-भीतर...
किसके ?
जिसे देखा नहीं अभी

औत्सुक्य -
जैसे कस्तूरी की गंध
नाप लेने की जिद सारे जंगल को
सर्जन की यह उड़ान
कहाँ तक ?
जाने हरिण के पाँव

अनुभव -
अनिवर्चनीय जैसे कविता...
धरती पर खुलते पन्ने

Scanned with CamScanner

एक महाकाव्य के...
परिणाम
जन्मों की पीर का !

——

Scanned with CamScanner

आपका घर

कविता
रेखाचित्र
निबन्ध
कहानी
संस्मरण
जाने किस-किस जैसा
होगा आपका घर...

दीवारों को
सराहने वाले
सब आकर चले जाएँ
तो हमें बुलाना !

——

Scanned with CamScanner

नहीं हो सकती वह...

कभी नहीं हो सकती वह
मात्र एक कलाकृति

नहीं हो सकती वह
एक पैंटिंग
एक मूर्ति
एक म्यूराल
या एक कविता मात्र

भले ही
नाप आए वह
दुनिया के
सारे समन्दरों को

यूरोप और अमेरिका भी
चाहे हो जाएँ
लट्टू
उसके ज्ञान, सौन्दर्य और यौवन पर

पुरस्कारों के ढेर
भले ही
दें उसे आश्वासन
अमरता का

जब तक

Scanned with CamScanner

उसके पोर-पोर में
रची रहेगी
सोलह आने भारतीयता

जब तक
लिखती रहेंगी
उसकी अँगुलियाँ
कथाएँ
इस मिट्टी की

नहीं हो सकती वह
मात्र एक कलाकृति...
कभी नहीं !

Scanned with CamScanner

पराकाष्ठा

देख सको तुम
यौवन की
पराकाष्ठा...
इसलिए
आँधियाँ
अपने साथ
उड़ा ले गईं हैं
सभी खेजड़ियों की
चूनड़ियाँ..!

———

Scanned with CamScanner

बादल रीता...

तुमने
मुझे मारे ताने...
तुलसी ने
हरसिंगार को...

मैं और हरसिंगार तो
चुप ही रहे
सदा की तरह..

नदियाँ
बादलों को
रिझाती आई हैं
ऐसे ही...

एक बादल रीझा
कल भी

अगर नहीं
तो दोनों सखियाँ
देखो उघाड़कर पीठ
आपस में
कि किसने लिखी
आड़ी-तिरछी कविताएँ
नाख़ूनों से

Scanned with CamScanner

नदियाँ
बादलों को
रिझाती आई हैं
ऐसे ही...

तुमने
मुझे मारे ताने
तुलसी ने
हरसिंगार को

तुम और तुलसी तो
जन्मी हों
अपने ही गर्भ से
मगर
मुझे और हरसिंगार को
न देतीं गर्भ तुम
तो क्या होता..

कोई रीता बादल
भरता न कभी !

———

Scanned with CamScanner

थोड़ा-सा यहीं...

तुम इसे किसी कविता की संगति में लिखी
एक और कविता समझो
या तुम्हारे घर छोड़कर जाते समय
मेरे होठों पर नाचते विस्मय का
आधा-अधूरा रूपान्तरण...

मैंने तब भी यही कहा था
आज भी यही कहती हूँ
और आगे भी यही कहूँगी
कि हाँ पुरुष
जब तुम चले जाओगे
तो थोड़ा-सा यहीं रह जाओगे मेरे पास

सच ही
रह जाओगे थोड़ा-सा...

क्या तुम्हें भी
यह एहसास होगा कभी
कि तुम किसी के लिए थोड़े-से रह गए हो

इस वहम में ही सही
कि एहसासों के लिए
तुम्हारे दिल में जगह होगी

Scanned with CamScanner

मेरा यह जीवन तो कट ही जाएगा

एक स्त्री होने के नाते
यही सिखाया गया है मुझे
कि पुरुष चाहे चला जाए कितनी ही दूर
थोड़ा-सा तो उसे
रखना ही है तुझे अपने पास
कि अभिशप्त होकर
सब-कुछ खोकर जब वह लौटे
तो फिर से सीख सके
चलना सिर उठाकर वह

पुरुष
जब तुम चले जाओगे.. !

———

Scanned with CamScanner

बिना शीर्षक के...

झिझक की छोटी-सी डाली को
हटाकर काँपते हाथों से
कहना
शीर्षक को तरसती
किसी तसवीर के लिए
कि न हो इसका कोई नाम
तो अच्छा है

बहुत बार
एक नाम
एक शीर्षक
रोक देता है बहाव
चाँदनी को अपने बदन पर मलकर
इठलाती चलती नदी का...

एक कसक कर जाती है घर
किनारे खड़े बावरे के मन में
कि बिना शीर्षक के
बिना नाम के
कैसी होती यह नदी

कैसी होती तुम...?

———

Scanned with CamScanner

अतृप्ति

रात !
अँधेरे की पालकी में
नितान्त अकेली तू...

कोई प्यास आती है
जो चूमकर तेरे कपोल
भड़काती है
और अधिक तेरी अतृप्ति को...
फिर मुड़ जाती है वापस...

दे पाता तुझे अगर
मेरी साँस
मेरे शब्द
मेरी जिजीविषा...

पी जाता
तेरी देह अगर
प्यास के आने से पहले
तो
कभी न मुड़कर जाती वह...

रात !
सुबह तक फूटती
तू एक कली-सी !

———

Scanned with CamScanner

अन्तराल

आज
इतने सारे काले बाल मिलकर
एक सफ़ेद बाल का
बोझ नहीं उठा सकते...

कल
इतने ही सफ़ेद बाल मिलकर
एक काले बाल की
उपस्थिति तक सहन नहीं करेंगे...

आज और कल में
ऐसा क्या है
जो बदल जाएगा...?

रंग ही तो..!

आईने का ?
आँखों का ?

नहीं, तुम्हारे भय का !

———

Scanned with CamScanner

तुम

कविता में
यह जो होता है तुम -
चाहे
मेरा हो या तुम्हारा

इसके बारे में
न पूछा जा सकता है
न बताया जा सकता है

तुम्हारा तुम
तुम्हारा अनुभव
मेरा तुम
मेरी वेदना

फिर भी
दोनों के तुम
कहीं न कहीं जाकर
एक तो हो ही जाते हैं

तुम
जिन्होंने सीखा नहीं प्यार
पागलपन की हद तक !

———

Scanned with CamScanner

एक झूठ

परदा ख़ाली है
लेकिन भरा
एक प्रकाश मूर्तमान रहता है
सफ़ेद, लाल या हरा...

तुम्हें
नहीं दीखता कोई चित्र
पर कुछ न कुछ
उभरा रहता है
अवश्य यहाँ

ख़ूब कहा तुमने...

दार्शनिक के रूप में
अपनी स्थापना को
पुष्ट करने की कला
कोई तुमसे सीखे

यह जानकर भी
कि यहाँ न कोई परदा है
और न ही इसे
भरा रखने वाला कोई रंग
चाहते हो तुम
कि सब तुम्हारा कहा मानें

Scanned with CamScanner

दर्शननामी चादर ओढ़कर
औरों को
भ्रम में रखने वाले विद्वानजी...

स्वयं के भ्रम का
निवारण तो करो
अपने ख़ालीपन से
इतना भी न डरो.. !

———

Scanned with CamScanner

कुछ भी इम्पॉसिबल नहीं...

कुछ भी
इम्पॉसिबल नहीं..
क्यों नहीं हो सकता रात
यह दिन -

करके दिखाओ...

भरी दुपहरी में
डाल के मुँह पे कपड़ा
वह बोला -
लो, रात हो गई...
चाहो तो
तुम भी ऐसा कर सकते हो...

सबने उसे बेवक़ूफ़ कहा
बेवक़ूफ़ !
बेवक़ूफ़ !!
बेवक़ूफ़..!!!

इसी बेवक़ूफ़ी में
शाम हुई
रात हुई...

आधी रात को

Scanned with CamScanner

किसी एक ने उससे कहा
कि हटाकर कपड़ा चेहरे से
दिन करो ना..

उसने हटाया कपड़ा
मुस्कराया
और बोला -
दिन ही तो है..

———

Scanned with CamScanner

इसमें भी मेहनत कम नहीं...

मेरे ठाठ
मेरे आदमी होने से नहीं
बन्दर होने से हैं -
मैं आज जो भी हूँ
बिल्लियों को
आपस में लड़ाने से हूँ...!

———

Scanned with CamScanner

हिस्से

पैरों से जोड़कर
बड़े-बड़े बाँस
सीखा लोगों को देखना
ऊँचाई से...

कहता फिरा
कि ये बाँस
अब हिस्से हैं
मेरे ही शरीर के...

कोई माना ही नहीं...!

आज
जब मैं मरा
सबसे पहले
खोले गए वही बाँस...

अब तो मान लेते...
शरीर के जैसे ही तो हैं बाँस...!

———

Scanned with CamScanner

मशीन

मशीन
तुम्हें सिखा रही होगी
जीना -
मैं तो इसमें
मरने की
सहूलियत देखता हूँ !

———

Scanned with CamScanner

अपनी ज़मीन : अपनी छत

उम्र ढल रही है
रही है कम
कि एक घर तो बनाओ -
अपनी ज़मीन, अपनी छत होने की
बात ही कुछ और होती है...

तुम शेष रही उम्र की बात करते हो दोस्त -
मैं जानता हूँ
कि एक उम्र के बाद नहीं होती उम्र...

हाँ, उम्र ढल रही है
ढलेगी ही...
रही है कम
रहेगी ही नहीं...

तुम कहते हो कि बीतने से पहले
रीतने तक
एक घर तो बनाऊँ...

यह समझा हूँ तुम्हारी बात का मतलब
कि कब तक
अपने बूते सीधी रहेगी पीठ
कब तक
अपने बल पर तना रहेगा यह सीना -

Scanned with CamScanner

एक घर तो होना ही चाहिए...

काश !
मैं हँसने के लिए रहूँ तुम्हारे इस भोलेपन पर...
जब मेरी मरी हुई पीठ को
दिखाई जाएगी ज़मीन -
आह !
वह पीठ
जिसने ज़िन्दा रहते
सिर्फ़ तलवों को ही ज़मीन दिखाने की कोशिश की...

काश !
मैं हँसने के लिए रहूँ तुम्हारे इस भोलेपन पर
जब मेरे बुझे हुए सीने को
ढका जाएगा धुएँ की छत से -
आह !
जिस सीने ने
सुलगते दिनों में
धुएँ को उड़ाया फूँक में सदा

जब तक पीठ ज़िन्दा है...
सुलगता है सीना जब तक...
मेरे तलवों को ही देखने दो ज़मीन...
मेरी फूँक में ही उड़ने दो धुएँ को...

नहीं बनाना घर मुझे..!

———

Scanned with CamScanner

अग्निगर्भा !

अग्निगर्भा !
धारण करो मुझे -
इस जन्म में
मुझसे
वह कुछ भी न फूँका गया
जो मैंने सोचा था !

———

Scanned with CamScanner

है अभी शेष...

तिल-तिल कर
जल गया हृदय
थमना है साँस को अब...
फिर भी
राख के ढ़ेर की
आख़िरी चिंगारी के मानिन्द
जीने का प्रण है अभी शेष...

मेरे कमरे की
खिड़कियाँ खोल दो
परदे हटा दो...
और बाहर जाकर देखो
कि गली के नुक्कड़ पर
कौन मुड़ा है..?

एक बार दे दो मुझे
आज का अख़बार
परिवेश देख रहा है मुँह
चन्द टिप्पणियों का...

थोड़ी देर के लिए
छोड़ दो मुझे अकेला
फूट रहा है

Scanned with CamScanner

शब्दों का प्रणय...
जन्मना है
एक कविता को...

जीने का प्रण है अभी शेष..!

———

Scanned with CamScanner

आशीष के दो चुम्बन

नन्हें-से चाँद की मुट्ठी में
भरकर
आशीष के दो चुम्बन
पुरुषार्थ की देवी ने
भेजा उसे मेरे पास...
यह कहकर
कि ज़ल्दी जा
चुक रही है पूँजी
मेरे एक प्रिय की
और यह भी
कि ज़ल्दी आना
बारिश के दिन हैं...

चाँद जब चला
तो नाच रही थीं
परियों की छोटी-छोटी बालाएँ
आसमान के सतरंगे चौक में -
चाँद ठिठका
पर रुका नहीं...
हवा में
कुछ बदमिज़ाज बादल जो तैर रहे थे...

मेरे घर की छत पर
बिखर गई झीनी रोशनी..
मुट्ठी भींचे उतरा

Scanned with CamScanner

एक नंग-धड़ंग शहज़ादा -
मुझे ज़ल्दी जाना है
बालाओं के नाचने के दिन हैं...

उसने खोली मुट्ठी

और मुस्कुराता हुआ बोला -
लो चूम लो हथेली
यही कहा है माँ ने...

होंठों ने पढ़े
आशीष के दो चुम्बन...
साँसों की धूनी तक
उतरा सम्बल ही सम्बल
कि एक बिजली कड़की
एक बादल फटा...
सब-कुछ लुट गया
ऐसा लगा...

जाते हुए चाँद की आवाज़ सुनाई दी -
मत घबराना चुनौतियों से...
मैं कल फिर आऊँगा !

———

Scanned with CamScanner

पानी : पाकर तुम्हारा आलिंगन

पानी !
तुझसे बात न कर पाने की तड़प
अब जीने न देगी मुझे -

जब तू आँसू होता है
तो तुझसे पहले
बोल पड़ती है आँख...

चरणामृत होता है
तो अँजुरी मुस्कुरा उठती है...

प्यास में होंठ इतने अधीर हो जाते हैं
कि उनकी लरज़ में
खो जाते हैं मेरे प्रश्न...

नल के तले
घड़े में समाता तेरा रूप
जाने क्या गुनगुनाता है
कि तुझे बीच में रोकना
मुझे धृष्टता लगती है...

कई अवसरों पर
तुझसे भरे कलश में
जब मैं झाँका
तो ख़ुद का चेहरा आड़े आ गया...

Scanned with CamScanner

नदी के पुल पर गया
तो मौत के भय ने
तुझसे बात न करने दी...

सागर के तट पर जाकर खड़ा हुआ
तो जैसे सागर ही मुझसे पूछने लगा -
सुनामी को भूल गए क्या..?

पानी !
हर बन्धन को तोड़कर
क्यों तू मुझसे बात नहीं करता..?

कल तकिए को यह कहकर सोया -
भाई !
सपने में आज
पानी से ज़रूर मिलवा देना..

तुम आए भी सपने में
लेकिन झरना बनकर -
गिरते ही रहे
घाटी के घने केशों में...

बहुत मथा मैंने अपने आप को
कि क्यों मैं व्याकुल हूँ इतना
तुझसे संवाद करने को...
वह कौनसा रहस्य है
जो मेरी बुद्धि के समक्ष खुलने से घबराता है...?

Scanned with CamScanner

क्यों मैं जब चाहे हठ करके
हवा से लिपट जाता हूँ
मिट्टी में लोट जाता हूँ
कि एक बार
सिर्फ़ एक बार
पानी से कुछ पूछ सकूँ
कुछ बता सकूँ उसे...

क्यों इतना विदग्ध हूँ मैं...?

विक्षोभ की
व्यक्त-अव्यक्त पीड़ा को सहते-सहते
क्या यह उम्र गुज़र जाएगी...?

यदि यही सत्य है
कि न होगी बात तुझसे
तो फिर क्या ज़रूरी है
पीड़ा को सहना
तृष्णा को पालना...?

एक दिन...
ख़ूब गरज़े बादल
ख़ूब चमकी बिजलियाँ...

अपनी तेज़ बौछार के साथ
खिड़की के रास्ते
मेरे बदन को
महकाने लगे तुम

Scanned with CamScanner

सारा शहर
बन्द कर-करके दरवाज़े-खिड़कियाँ
तुम्हारे थमने के इन्तज़ार में
जैसे नज़रबन्द हो गया था...

...लेकिन
मैं होकर छोटा बच्चा
फेंककर अपनी बनियान गली में
जा खड़ा हुआ
खुली छत पर

ख़ूब भीगा मैं
ख़ूब रोया तुम्हारा आलिंगन पाकर...

बरसों बाद
यह समझ में आया
कि पानी से बात करने के लिए
पानी होना पड़ता है !

———

Scanned with CamScanner

मेरा कैशोर

याद आता है कैशोर !
कैशोर
ऊर्जा का प्रथम संचय
अनुभूति का अमर तीर्थ..

याद आते हैं
चाँद की गोद से झरते
नदी की झोली भरते शब्द
जिन्हें
बुनना सीखते-सीखते
कभी टूट जाता
आँसुओं का धीरज...
कभी फूट जाता
हँसी का झरना...

याद है
हथेली के टापू पर
प्यार जैसे किसी अनुभव का
बसा लेना घर...
देह को पिघलाता
वह रेशमी स्पर्श...

रातों को जागकर
रमाना धूना
कल्पना के पर्वत पर...

Scanned with CamScanner

रटन एक ही नाम की
तप एक ही कामना के लिए...

उगते सूरज के साथ
अभ्यास त्राटक का...
साहस हो जाए
इतना घनीभूत
कि ठहर सकूँ कुछ देर
नीली आँखों में...

खोज ज्ञान की
लुगदी पर छपे
तन पर मधुर प्रहार करते
उत्तेजक अक्षरों में...

पहला सूत्र दर्शन का
कि प्यार नाम है
द्वैत में अद्वैत का...
जो मेरा है
वही तो बसता है मुझमें...

सबसे बड़ा विद्रोह
स्कूल से भागकर
देखना फ़िल्म
चोरी के पैसों से...
कितना सम्मोहक
रंगों का जादू...
कितना तप्त
परदे का लावण्य...

Scanned with CamScanner

क्रांति विषय उसी का
जिसकी हथेली के
भीगे टापू पर
प्यार बसा लेता हो घर...
क्रांति लक्ष्य उसी का
जिसका बदन
एक कोमल स्पर्श से
लगता हो पिघलने...

हृदय की नियति नहीं
कि सिर्फ़ धड़कता ही रहे
तड़पती छाती के पीछे...
वह हृदय ही क्या
जिसकी पेशियाँ
समय के समरांगण में
न हो जाएँ फ़ौलाद की

जिसके लिए बुने शब्द
रमाया धूना
किया तप..
जिसके मौन में गूँजता हूँ मैं...
काँपता हूँ जिसकी सिसकी में...
अपनी पीठ पर
गुदवा लिया है जिसने
एक सितारा
मेरे नाम का...

मेरा हक़ है
कि बिठाकर सपनों के विमान में
ले जाऊँ उसे

Scanned with CamScanner

चाँद की नगरी...

प्यार में संघर्ष की
पहली उड़ान भरते
कच्ची उमर के
उस स्वप्नदर्शी के लिए
बहुत भारी पड़ा
टकरा जाना
समय के क्रूर बाज़ से...

एक झटके से
टूटकर हवा में
लहरा गए दोनों पंख...

कुछ बरसों में
दोबारा उग तो आए पंख
लेकिन
इस हक़ीक़त के साथ
कि पेट की भूख के आगे
बहुत छोटा पड़ता है चाँद...

याद नहीं !
जाने कब साधना ने
धर लिया रूप वासना का...

याद नहीं !
जाने कब
पहन लिया आँसुओं ने
कृतघ्नता का लिबास...
कब ओढ़ ली हँसी ने

Scanned with CamScanner

स्वार्थ की चुनरी...

जाने कब भटक गया
सपनों का
वह तेजस्वी विमान
अपने ही रचे आसमान में...

जाने कब
समाधिस्थ हो गया प्यार
अन्तरिक्ष के किसी गह्वर में...

दीवार की दरार में
हठ करके उगे
पीपल के पेड़-सा
मेरा वह निर्दोष विद्रोह...

सूरज का रथ हाँकने को व्याकुल
मासूम तारे की प्रतिज्ञा जैसी
मेरी वह उत्तप्त क्रांति..

तर्क के राक्षसी वक्ष पर
भावना के गीत रचता
मेरा वह तपस्वी रूप...

अब सब तुम्हारी झोली में
मेरे बच्चो..
जी सको तो जी लो
अपने अनमोल कैशोर को...!

———

Scanned with CamScanner

किन्हीं और होंठों के लिए...

मैं नहीं जानता ज़िन्दगी
कि तू एक लम्हा है या एक सदी...

किन्तु...

लगता है कभी जब भारी
एक लम्हा एक सदी से
तो मेरी साँस का
घुटनों के बल चलना सीख रहा बच्चा
उठा नहीं सकता
अपना ही बोझ...

और...

कभी जब वही एक लम्हा
मारकर ठोकर
उदास पड़ी सदी को
बैठ जाता है
उम्मीद की तितली के
हसीन विमान पर
तो खिलखिलाकर उठ खड़ा होता है
घुटनों के बल चलना सीख रहा
वही बच्चा मेरी साँस का...

तब मैं सोचता हूँ...

Scanned with CamScanner

ज़िन्दगी
तू न एक लम्हा है
न ही एक सदी...
तू होंठों के दरवाज़े के भीतर
रह-रहकर काँपते
एक चुम्बन की कसक है
जिसे
समय के किसी पैमाने पर
स्थिर नहीं किया जा सकता...
तेरे लिए तो
बस खोला जा सकता है
दरवाज़ा ही होंठों का...

तेरे लिए तो
किए जा सकते हैं स्वतन्त्र
चुम्बन ही चुम्बन...
कभी किसी बच्चे के
कोमल गाल के लिए
कभी किसी फ़क़ीर की
खुरदरी हथेली के लिए
तो कभी
रह-रहकर काँपते चुम्बनों को ही
अपने भीतर छुपाए
किन्हीं और होंठों के लिए...

मैं नहीं जानता ज़िन्दगी
कि तू एक लम्हा है या एक सदी...!

———

Scanned with CamScanner

फूल की पंखड़ी पर शूल

नाव से
बहुत डरता हूँ मैं...
इस तनाव ने
सदैव
तुम्हारे डर को
और सुलगाया है -

ख़ास तौर से तब
जब
किसी झील
या नदी के किनारे
हम दोनों साथ गए हैं

'नहीं,
नाव को
दूर से ही देखोगे तुम...!'

लगता है
कि मेरा डर
हो गया है तुम्हारा
और
तुम्हारा डर मेरा

डर
हो गए हैं एकमेक

Scanned with CamScanner

या घुल गई हैं
ग्रंथियाँ...?

'हाँ,
नाव को
दूर से ही देखूँगा मैं...!'

डर
नाव से नहीं
पानी से है -
नाव
अगर रखी होती
सड़क के बीच
तो
क्या तुम कहती
कि नाव को
दूर से ही देखोगे तुम...

डर
पानी से भी नहीं -
पानी
अगर ठहरा होता
किसी तसवीर के
केन्द्र में
तो
मैं यह कभी न कहता
कि नाव को
दूर से ही देखूँगा मैं...

डर

Scanned with CamScanner

नाव को खेने वाले
आदमी से भी नहीं -
आदमी
अगर झुका होता
दाम्पत्य के
वक्ष पर
तो
क्या डर लगता तुम्हें..?

नहीं न..!

वस्तुतः
डर
न नाव के
पलटने का है..
न पानी के
बहाव का...
न ही आदमी के
अविश्वास का

डर
उस अनर्थ का है
जिसे हमने
मन में
गढ़ लिया है -
एक फूल की पंखड़ी पर
शूल
पढ़ लिया है...!

———

Scanned with CamScanner

तुम मुझे एक बच्चे की तरह प्यार करो...

गहरी नींद में
डर गया हूँ आधी रात
दुःस्वप्न ने डस लिया है
मेरा अस्तित्व...
तुम मुझे एक बच्चे की तरह प्यार करो -
इस देह पर
कहीं भी रखकर अपने होंठ
खींच लो विष ...
माना कि कल तक तुम
एक सीधी-सादी, भोली-भाली लड़की थी...

मेरे हाथों में है
एक टूटा हुआ खिलौना
मुझे चाहिए
एक नया खिलौना...
तुम मुझे एक बच्चे की तरह प्यार करो -
मेरे हाथों में
देकर अपने हाथ
दिखाओ खिलौनों की बस्ती...
माना कि कल तक तुम
एक सीधी-सादी, भोली-भाली लड़की थी...

तपती सड़क पर

Scanned with CamScanner

निकल पड़ा हूँ नंगे पाँव
मुझसे अब
आगे चला जाता है न पीछे...
तुम मुझे एक बच्चे की तरह प्यार करो -
लहरा दो अपनी चूनर
कर दो छाँव...
माना कि कल तक तुम
एक सीधी-सादी, भोली-भाली लड़की थी...

पुरुष को
जब-जब भी डसा है दुःस्वप्न ने
बच्चा ही बनता आया है वह...
हर अधूरी महत्त्वाकांक्षा लगी है उसे
टूटे खिलौने जैसी...
जब-जब बिना सोचे-समझे रखा है पाँव उसने
तपती सड़क पर...
तब-तब तुमने ही
पिलाया आशा का अमृत
दिखाया चाँद थाली में
ताना शामियाना अभय का...

तुम जो भी हो स्त्री...
माँ, बहिन, बेटी, पत्नी, प्रेयसी
या कल तक की
एक सीधी-सादी भोली-भाली लड़की...
तुम मुझे एक बच्चे की तरह प्यार करो...!

———

Scanned with CamScanner

अमावस

यह पहली दीवाली है
जब
मम्मी-पापा
तुम्हारे भैया के पास गए हुए हैं
और बच्चे
मेरे भैया के पास...

वे
बेटे के नए घर में
दीप जलाकर ख़ुश हो रहे होंगे
और वे
मामा की नई कार में
रौशनी देखने निकले होंगे...

बीस बरसों की मैरिज-लाइफ़ में
यह पहली दीवाली आई है
कि तुम और मैं
अकेले हैं घर में...

देखो !
शादी की यह चूनड़ी ओढ़कर
कितनी सुन्दर लग रही हूँ मैं
तुम भी पहन लो वही शेरवानी
जो तब पहनी थी तुमने..

आज फिर से जी सकते हैं हम

Scanned with CamScanner

लम्हे पहली उस रात के..
हाय राम !
मेरा तो दिल धड़कने लगा है तेज़-तेज़...

आओ !
दिखाती हूँ तुम्हें
कि कैसी सेज सजाई है मैंनें...

चारों तरफ़ से बरसती
इस रौशनी को देखकर
लगता है
जैसे यह ज़िन्दगी कभी ख़त्म ही न होगी..

ओफ़्फ़ो..!
कितनी सिल्ली हो तुम डार्लिंग
कितनी इल मैनर्ड
और सैल्फ़िश भी...
देख नहीं रही हो
कि अभी-अभी
लक्ष्मी-पूजन सम्पन्न किया है मैंने...

घर के सारे दरवाज़े खोलकर
कितनी बेचैनी से
घूम रहा हूँ मैं
कि कहीं एक बिल्ली दिख जाए...

आज की रात
जिसे बिल्ली दीखती है
वह मालामाल हो जाता है !

———

Scanned with CamScanner

पटरियाँ

रेल की पटरियों को तो
ख़त्म होना ही होता है
कहीं न कहीं...

ख़त्म नहीं होती
तो मन की पटरियाँ -

पटरियाँ -
गोल-गोल घूमकर
व्याकुलता से
आपस में जुड़ीं -
गुज़रती हुईं
बदन की न जाने
कितनी ही सुरंगों से...

पटरियाँ -
जिन पर दौड़ती है
तेरी चंचल छाया...
तैरती है
तेरी तरल स्मृति...
ठिठकती है
तेरी मोहक हँसी...

एक प्यास
एक अतृप्ति
एक अधूरेपन ने
कितनी ख़ूबसूरती से

Scanned with CamScanner

ओढ़ रखा है
सुनहरा आसमान
कामनाओं का...

नहीं तो
क्या अब तक
ये पटरियाँ सारी
पिघलकर
नदी नहीं बन जातीं
होने को विलीन
काल के
अनन्त मरुस्थल में...

क्या ज़रूरी था
होना मूर्त इनका -
क्या पीड़ा थी
कि ढलना पड़ा
इस्पात में इन्हें...

यह मन ही तो है
जो लेना चाहता है
जन्म बार-बार -
शरीर को तो
मिल ही जाती है
मंज़िल आख़िर...

प्यासा रहता है
अतृप्त रहता है
अधूरा रहता है
तो यह मन ही -

Scanned with CamScanner

शरीर तो है
सिर्फ़ अभिव्यक्ति इसकी...

बार-बार
मिट्टी होने के बाद भी
नहीं बुझ सकती अगर
कामनाएँ हमारी -
यह मन अगर था
और रहेगा
सदा के लिए
तो क्यों न
जोड़कर आपस में
तन और मन की
इन पटरियों को
पिघलने की
कोशिश करें हम...

इसलिए नहीं
कि होना है विलीन
काल के मरुस्थल में
बल्कि इसलिए
कि प्यार
आपस में जुड़कर
पिघलने का ही नाम है

बुद्धत्व
न तुम्हारे वश का है
न मेरे !

———

Scanned with CamScanner

ईश्वर के नाम पर...

मुझे देखते ही
जुगनू चमकने चाहिए थे
तुम्हारे साँवले बदन में -
प्यार न करने का तो
ख़्याल ही न आना चाहिए था...

अँधेरे की छाती पर
कोप का अखण्ड दीया जलाकर
अपने प्रीतम का
यह कैसा स्वागत कर रही हो तुम -
आख़िर
किस वचन की पालना चाहती हो मुझसे...

मैं कामासक्त दशरथ नहीं
कि प्रताड़ित करके निर्दोष पुत्र को
निष्कासित कर दूँ उसे वन में...

मैं मदोन्मत्त भीम भी नहीं
कि एक दहाड़ के साथ
चीरकर वक्ष बन्धु का
भरकर ला दूँ रक्त का कलश तुम्हें..

मैं पुरुष हूँ और तुम स्त्री -
ईश्वर को
यदि वह कहीं है

Scanned with CamScanner

तो हमसे समझदारी की बड़ी उम्मीद है...

वैसे इस चिंता में
कि उसका होना
हम स्वीकार करते हैं अथवा नहीं..
उस ईश्वर का
कोई भी काम रुकने वाला नहीं है...

तुम कहती हो
कि जिस ईश्वर के होने
अथवा न होने का कोई पता ही नहीं है...
और अगर वह कहीं है
तो भी
उसके होने को
हमारे स्वीकार करने या न करने से
उसका कोई काम रुकने वाला नहीं है....
वह आत्माभिमानी ईश्वर
हमसे
किसी प्रकार की अपेक्षा क्यों करेगा...

....इसलिए
भले ही तुम एक पुरुष हो
और मैं एक स्त्री -
हमें समझदारी बरतने की क्या ज़रूरत है...

चलो, ईश्वर के बहाने ही सही
तुमने यह तो माना
कि समझदारी बरती नहीं जा रही है...

अब यह भी मान लो

Scanned with CamScanner

कि ईश्वर के संदिग्ध होने से
हमारी असंदिग्धता पर
कोई प्रश्नचिह्न खड़ा नहीं होता है...
इसलिए जो संदिग्ध है
उसे अगर छोड़ भी दें
तो जो असंदिग्ध है
अर्थात् जो निश्चित रूप से है
उसके गौरव की रक्षा के लिए
क्या हमें विवेकशील नहीं होना चाहिए...

मैं असंदिग्ध हूँ
और तुम भी असंदिग्ध हो...
हम दो असंदिग्धों को मिलकर
विश्वास के
एक सुन्दर नीड़ का निर्माण करना चाहिए
अथवा अविश्वास की
कोई डरावनी खाई खोदनी चाहिए...

अगर खोदनी चाहिए
अविश्वास की कोई डरावनी खाई
तो इस खाई में गिरेगा कौन...
मैं, तुम या हम दोनों..

ईश्वर यदि कहीं है
तो हमारे खाई में गिरने से
उसकी स्वाभाविक गति पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा -
मरेंगे तो
आख़िर हम ही...

तो क्या इस छोटे-से जीवन में

Scanned with CamScanner

हमें इतनी बड़ी नादानी करनी चाहिए
कि हम एक-दूसरे पर
विश्वास ही न करें...

तुम्हें
शायद ठीक समझ में आई है मेरी बात -
तभी तो कह रही हो
कि अगर ऐसा है
तो यह घोर नासमझी है...

तुम डर भी रही हो
कि कहीं हमारे बीच तो
अविश्वास की कोई खाई नहीं खुद गई है..
कहीं हम तो नासमझी नहीं कर रहे हैं...

तुम स्त्री हो और मैं पुरुष -
इस दुनिया के बने रहने के दो मूलभूत कारक...
प्यार करने की इस घड़ी में ही
जब हम प्यार नहीं कर रहे हैं
तो इससे बड़ी नासमझी और क्या होगी...

इसी नासमझी में तो
आज बिना सोचे-समझे
क़ैद कर लिया जुगनुओं को तुमने
हृदय के किसी अज्ञात प्रकोष्ठ में
कि मुझे देखकर
वे तुम्हारे बदन में झिलमिलाने न लगें...

इस नासमझी में ही
थाम लिया

Scanned with CamScanner

प्यार के नैसर्गिक ज्वार को तुमने
इन्द्रियों की सुनहरी चौखटों पर
कि मुझे विश्वास हो जाए
कि तुम मुझ पर कुपित हो...

..और मैं भी उसी नासमझी में
तुम्हें मनाने का
कोई उपक्रम करने के बजाय
तुम पर संदेह कर बैठा
कि तुम
बीते युग का कोई चरित्र निभाकर
अपने किसी हठ को
निर्दयतापूर्वक पूरा करना चाहती हो...

इंसानों के बीच
जब-जब भी पैदा हुआ है शून्य..
चाहे वह
पुरुष और स्त्री के बीच ठहरा
एक रात का अबोलापन हो
या दो सभ्यताओं के बीच उपजा सदियों का मौन...
ईश्वर जैसे किसी अमूर्त प्रत्यय की दुहाई देकर ही
भरा गया है वह शून्य...

यह प्रयोग कभी विफल नहीं रहा
इसलिए मैंने भी
उसी ईश्वर का सहारा लेकर
खड़ा करके प्रश्न
उसकी संदिग्धतता का
अपना प्रमेय सिद्ध कर ही लिया...

Scanned with CamScanner

तर्क के इस पुल को
जिसके सहारे
पार करके आया हूँ मैं
सन्देह की गहरी खाई...
अब ढहा रहा हूँ मैं...

तुम भी बुझा दो
कोप का यह अवांछित दीया
और कर दो बोझ हलका
इस निर्दोष अँधेरे का...

अगर दिया भी था मैंने
कोई वचन तुम्हें कभी
तो प्यार के लिए
क्या ज़रूरी है
कि हम उसे याद रखें...

याद रखना तो यह ज़रूरी है
कि समझदारी किसमें है..?

———

Scanned with CamScanner

क्यों चाहिए शब्द...

भाषा से
क्या वैर ही संसिद्ध करते रहोगे तुम...
जो कहते हो
इन भोले शब्दों को
कि बैठो ज़बान पर
दो गाली...
उतरो काग़ज़ पर
करो हाका...

हर हिंसा में
चाहे वह जिह्वा से निकली
कोई गाली हो
या काग़ज़ पर छपी
युद्ध की कोई घोषणा -
भाषा ही रही है निशाने पर
निरीह गाय-सी भाषा...

जिनके लिए
शब्दों से विनाश रचने का
औज़ार है भाषा
उनके लिए
इसका शील-भंग करना
एक सर्वदेशीय उद्योग है
परन्तु जिनके लिए

Scanned with CamScanner

इस जग को सँवारने का
आत्मिक संस्कार है भाषा
उनकी तो सारी उम्मीदें
इसके भीतर पलते
मौन के शाश्वत सौन्दर्य पर टिकी हैं...

जब-जब आहत हुए हैं शब्द..
टपका है ख़ून
स्वरों
व्यंजनों
अल्पविरामों
पूर्णविरामों
व विस्मयादिबोधक चिह्नों से...
डरावने हुए हैं जब-जब
महाकाय प्रश्नवाचक चिह्न...
यह मौन की भाषिक अभिव्यक्ति ही थी
जो बही बनकर करुणा
कभी महावीर
कभी बुद्ध
कभी ईसा
और कभी गाँधी की आँखों से...

क्षमा को
नहीं चाहिए
अनुचर शब्दों के
जो रह न सकें क़ैद
होंठों की चारदीवारी में...
नहीं चाहिए

Scanned with CamScanner

पहिए व्याकरण के
हो जिन पर उत्कीर्णित
नाम किसी विजेता का...
नहीं चाहिए
फुदकते चूजे छन्दों के
जिन्हें रचे कोई और...
और
गुनगुनाए कोई और

क्षमा के लिए
शब्दों का न होना
भाषा की रिक्ति नहीं
शक्ति है..

जिस तरह
क्षमा दासी नहीं है शब्दों की
फिर भी वह भाषा है
उसी तरह
उम्मीद भी नहीं है प्यासी
शब्दों के प्रणय की...
नहीं चाहिए
उसे भी सहारा
फिसलती शिरोरेखाओं का...
नहीं चाहिए उसे शृंगार
बिन्दु
चन्द्रबिन्दु
अथवा
छोटी-बड़ी मात्राओं का

Scanned with CamScanner

उम्मीद के लिए भी
शब्दों का न होना
भाषा की रिक्ति नहीं
शक्ति है

वे
जिन्होंने सीखा ही नहीं
क्षमा करना...
वे
जिनके सपने
हमेशा डूबे रहते हैं
ख़ून में...
वे, जो मँडराते रहते हैं
इर्द-गिर्द
स्वरों की
काँपती आवृतियों के...
वे
जिन्हें चाहिए
शब्द ही शब्द
ध्वनि की कोख से जन्मे
अनगिनत शब्द...
वे एक दिन अवश्य जानेंगे
कि मौन
पराकाष्ठा है अभिव्यक्ति की
और आँसू है
सच्चा प्यार भाषा का...

कब तक भाषा से
वैर ही संसिद्ध करते रहोगे तुम...

Scanned with CamScanner

मौन
क्या तुम्हारा लक्ष्य नहीं...?

———

Scanned with CamScanner

सितार

'प्लीज़' -
मैं जानता हूँ
कि यह शब्द
सदैव डसता हुआ प्रतीत होता है तुम्हें

जब तक
मैं अपनी ग़रज़ से जन्मे
इस शब्द से बँधा हुआ हूँ
तब तक
तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम
सिर्फ़ शरीर का ही विषय है

यानी
मैंने मान लिया है
कि मेरा प्रेम
एक तरह से मेरी भूख ही है
और मैं
तुम्हारे संयम रखने के
अखण्ड व्रत को
बलात् भंग करता हूँ..

तुम्हारी अरुचि
और मुझ पर
उपकार करने का भाव
अगर तुम्हारे मानिनी-रूप से उपजा होता

Scanned with CamScanner

तो सोचना ही क्या था..
तब अनुनय का
एक शब्द क्यों
मनुहार का
पूरा शब्दकोश ही
दोहरा देता मैं

लेकिन
विधाता ही जानता है
कि कहाँ से सीखी तुमने
देह की इस नदी पर
बाँध बनाने की कला
और
कहाँ किया तप
संयम के अखण्ड व्रत को
ओढ़ लेने का..

समझ में नहीं आता
कि किस धर्मग्रन्थ में ढूँढूँ
इस प्रश्न का उत्तर मैं
कि अनुनय
जिसे डसता हुआ प्रतीत होता है
पौरुष के उफान में
वही देह
सितार-सी बजती
क्यों सुनाई देती है मुझे ?

———

Scanned with CamScanner

कि खोता कुछ नही...

उसे छूकर
जिसके भीतर टूटा है कुछ
मौन हुई
घबराई-सी वह चिड़िया -

जब आकाश ही
हो गया पीठ
तो उड़ने से निरर्थक और क्या होगा

उड़ने से निरर्थक और क्या होगा
जब हरियाली
हो गई शापित
और
धूप का शामियाना
जलने लगा ख़ुद ही

चुग्गा-पानी
नहीं चाहिए किसी को अब

उसे छूकर
जिसके भीतर टूटा है कुछ
वह चिड़िया सहमी -
मेरे पिता तो ऐसे न थे
कि उनके भीतर कुछ टूट जाए

Scanned with CamScanner

पिता
जिनकी उपस्थिति मात्र से
चौकन्ने हो जाते थे
घर में तैनात
अनुशासन के सारे सिपाही
और
घर के बाहर
जिनकी एक मुस्कान से ही
पुलकित हो उठता था हर कोई -

पिता तो ऐसे न थे..

वह खो गई
स्कूल के उन दिनों में
जब वह रोज़ ही
कुछ न कुछ
खोकर आ जाती थी -

माँ डाँटती थी
भाई चिढ़ाते थे...
जितना रोना आता था
उससे भी ज़्यादा ज़ोर से रोती थी वह
देखते ही पिता को

तब उठाकर भुजाओं में
वे ले जाते थे उसे
खिड़की के पास...
दिखाते थे
अनन्त आकाश -

Scanned with CamScanner

वहाँ से
वह सब-कुछ ले आएँगे हम
जो तुम कहती हो
कि खो गया है...
खोता कभी कुछ नहीं मेरी बेटी
सब वहाँ जमा हो जाता है
उसके महल में...

किसके महल में...

अरे
उस आकाश के महल में
जिसकी पीठ
हमें कभी दिखाई नहीं देती
और जहाँ रहती हैं
सम्भावना की
बहुत सारी परियाँ
प्यारी-प्यारी
तुम्हारे जैसी परियाँ
जो न केवल
हमें हमारा खोया हुआ
सब-कुछ लौटा देती हैं
बल्कि
सुन्दर-सुन्दर उपहार भी देती हैं...

आज
जब बेपरवाह हो गए हैं
घर में तैनात
अनुशासन के सारे सिपाही...
अपनी गहरी मुस्कान से

Scanned with CamScanner

सारे शहर को
वशीभूत कर लेने वाला
वो स्वाभिमानी चेहरा
भीगे तकिए में
ढूँढ़ रहा है अपना आश्रय
तो क्यों लगना चाहिए
उड़ना निरर्थक मुझे
क्यों नहीं हो जाना चाहिए हवा
यह सारा नैराश्य
क्यों नहीं गुनगुनाना चाहिए
इन पाँखों को...

कुछ ही पलों में
छोटा-सा एक हृदय
हो गया असीम
छाँव का सुहाना शामियाना
तन गया फिर से
धरती को जैसे मिल गया
इन्द्र का वरदान

जीने का मक़सद
किसे नहीं चाहिए...

लहराने लगी
एक नन्हीं-सी चोंच
आधे चाँदी हो गए बालों में
कि करवट लेकर उठे पिता...
हाथ थामकर ले गए उसे
खिड़की के पास

Scanned with CamScanner

कभी-कभी
मेरा भी कुछ खो जाता है
ज़िन्दगी के इस स्कूल में
लेकिन बेटी
तुझे देखकर लगता है
कि खोता कभी कुछ नहीं..!

——

Scanned with CamScanner

यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है...

हाँ, मैं उन्हें बहुत मानता हूँ
मेरे मन में उनके लिए अपार श्रद्धा है
लेकिन मैं उनसे सहमत नहीं हो पाता
जब वे कहते हैं
कि रेगिस्तान का अपना कोई सौन्दर्य नहीं होता !

मेरा मानना है कि
सौन्दर्य के सारे सोते
रेगिस्तान से ही फूटते हैं...
शून्य से शब्द तक की कल्पना का सारांश
मुझे रेगिस्तान में ही नज़र आता है

सुगन्धमयी सुबह ...
सूरज के गोले का
यौवन के उन्नत शिखरों जैसे
धोरों के बीच से उठना
और किरणों का
उतर जाना कण-कण में...
देखा है किसी ने इतना सोना...
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है

धोरों के नीचे बहती सरस्वती के
मदिर अधरों की

Scanned with CamScanner

चिर मुस्कान का बिम्ब ही है
कि नहाना रेत की नदी में
धूप की
निर्वसन गोपियों का
और गडरिये किशोर की साँसों का
घुल जाना बाँसुरी में...
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है !

ताम्बई पौरुष की
वह अजेय कठोरता
और बल खायी मूँछों का
भोला बाँकपन...
उस पर धूल में पली-बढ़ी
सर्वांग सुन्दरियों का
सहज समर्पण...
पुरुष और प्रकृति का
ऐसा मिलन और कहाँ...
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है

रात अँधेरी हो या चाँदनी
माँडनों की सेज अवश्य सजती है
टीलों के पार से
सुनाई देती है फुसफुसाहट
तो कभी मिली-जुली हँसी...
रामू-चनणा
ढोला-मारू
महेन्द्र-मूमल रोज मिलते हैं यहाँ...
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है !

ऊँट के पाँवों में

Scanned with CamScanner

उस बच्चे का
निश्चिन्त भाव से खेलना
फिर उसकी पीठ पर चढकर कहना
माँ, मैं चन्दामामा से मिलने जा रहा हूँ
और माँ का
मुँह में पल्लू दबाकर हँस देना...
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है

अपनी चूनर से
पौंछती है बहिन
भाई की धूल भरी कलाई...
कितनी कोमल होती है बहिन
कितनी सरल और पवित्र...
जानना चाहो
तो आओ
मेरी कलाई पर
अपने होंठ रखकर देखो
बह रहा है कितना शीतल झरना
मरुधरा में भी...
यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है

मेरा मानना है
कि सौन्दर्य के सारे सोते
रेगिस्तान से ही फूटते हैं...
शून्य से शब्द तक की कल्पना का सारांश
मुझे रेगिस्तान में ही नज़र आता है...

यौवन के शिखरों के बीच से सूर्योदय...
रेत की नदी में गोपियों का स्नान...
गडरिए की वंशी...

Scanned with CamScanner

रामू-चनणा
ढोला-मारू
और महेन्द्र-मूमल की हँसी...
बालक का ऊँट की पीठ पर चढ़कर
चाँद से मिलने जाना...
कलाई में बहता शीतल झरना...

सूर्य से लेकर बालक और बहिन के सौन्दर्य तक
उमड़ती है श्रद्धा ही श्रद्धा
इसके अतिरिक्त कहीं कोई सौन्दर्य नहीं बचता...

यह रेगिस्तान का अपना सौन्दर्य है..!

———

Scanned with CamScanner

सेज़

इन धोरों को
आने वाली पीढ़ी जानेगी भी -
कहा नहीं जा सकता...

दीवारों पर टँगी तसवीरों के अतिरिक्त
होंगे अस्तित्व में ये सुनहरे माँडणे -
किसे भरोसा है...

देखना तुम...

खेजड़ी ढोएगी बोझ
संस्कृति की पीठ पर उभरे
प्रश्नवाचक चिह्नों का...

माँड हो जाएगी गूँगी...
कोई गाने वाला ही न रहेगा
कि आओ नीं पधारो म्हारै देस...

ऊँट दिखाई देंगे
सिर्फ़ सपनों की आभासी दुनिया में...

मूमल छाती कूटते-कूटते
हो जाएगी काली गठरी
और धर लेगी रूप रुदाली का..

भूमण्डलीकरण का गलहार पहने

Scanned with CamScanner

झूम रहे ये लोग
किसी और लोक से नहीं आए हैं
जो निर्दयता से दबोचे बैठे हैं
इस मरुभूमि को..

प्रकृति की माँग से पोंछकर सिन्दूर
भरा जा रहा है उसमें बारूद
किसी अज्ञात विकासपुरुष के नाम का..

विकासपुरुष -
जो बिछाएगा सिर्फ़ शूल
सुहाग की हरियल सेज पर

नेताओं, अफ़सरों और सेठों की कोठियाँ
सब लद-फद जाएँगी
सोने और चाँदी से -
बाँझ होगी तो यह धरती...

कितनी निर्लज्जता से कहते हैं वे
कि जब तक इस धरती पर
वोट देने वाली प्रजाति जीवित है -
यह न बाँझ हो सकती है
न मर सकती है...

वे कहते हैं
कि सपने
इस देश की जनता में
प्राणवायु का संचार करते हैं
इसलिए हर चुनाव में
विकास के नए-नए मुद्दे

Scanned with CamScanner

खड़े करना बहुत ज़रूरी है...

और यह भी
कि आँखों के सामने
कैसे मरने दिया जा सकता है
उन लोगों को
जो सपनों के बदले देकर वोट
अपनी हुकूमत हमें बेच देते हैं...

हुकूमत करने वालो -
क्या कभी सोचा तुमने
कि कोठियाँ
आसमान में नहीं बनी हैं तुम्हारी..
न ही इस धरती पर
खुला हुआ है कोई दफ़्तर
पापमोचन-पत्र बेचने वालों का
जहाँ से सोने और चाँदी के बदले
हासिल कर लोगे तुम
गारण्टी अमरत्व की...

विशेष आर्थिक क्षेत्र
जिन्हें तुम 'सेज़' कहते हो
और जिसके नाम पर
खड़े करके नारकीय कारख़ाने
सपनों का जो उत्पादन कर रहे हो तुम -
देखना...
यही कारख़ाने
एक दिन
तुम्हारी बहू-बेटियों के
अनैच्छिक गर्भपात का कारण बन जाएँगे...

Scanned with CamScanner

और तरस जाओगे तुम
देखने को मुँह एक नवजात का...

पूछते हो क्यों..
तो मुझसे नहीं
इन सजीले माँडणों से
इन हठीले ऊँटों से पूछो -
पूछो सुरीली मूमल से
और इन लजीली खेजड़ियों से
जिनके बदन
कर दिए हैं छलनी तुमने
विदेशी कम्पनियों द्वारा
उपहार में मिली बन्दूकों से...

ये विकास के झण्डे नहीं हैं
जो तुम उठाए हो -
असल में अपने हाथों में तुम
आने वाले नस्लों के कफ़न लहरा रहे हो...

आज हँसी में टाल रहे हो
मेरी बातों को तुम..
क्योंकि तुम्हें भरोसा है
नए ज़माने के इंजीनियरों पर
जो बना देंगे तुम्हारी कोठियाँ
आसमान में...

तुम आश्वस्त हो
कि बहू-बेटियों की कोखें माँड देंगे
अमरीका से
नई पढ़ाई पढ़कर आए डॉक्टर..

Scanned with CamScanner

लेकिन
कल जब विज्ञान भी
खड़े कर देगा हाथ
तब हमारे पास
कोई विकल्प नहीं रहेगा शेष
सिवाय बैठकर रोने के
इन कारख़ानों के अवशेषों पर
जो सपनों के उत्पादन के लिए
किए जा रहे हैं स्थापित
इस सुन्दर मरुभूमि पर..

इसलिए इतना तो करो
कि बनवाकर रख लो कुछ प्रस्तर-लेख
जिन्हें गाड़ सकें हम
धरती की राख हो चुकी छाती पर
कि यहाँ है सभ्यता का क़ब्रगाह
जिसे हमने
बहुत सोच-समझकर बनाया था..

काल कभी लेगा करवट -
निकल पाई बाहर अगर
आने वाली नस्लें
अपनी क़ब्रों से
तो उन्हें इस बात के साक्ष्य
बड़ी आसानी से मिल जाएँगे
कि विगत सभ्यता का
अवसान कैसे हुआ था..?

—

Scanned with CamScanner

द्रोण का प्रायश्चित्त

दो हज़ार वर्ष पहले
चार हज़ार वर्ष पहले या उससे भी पहले...
कहते हैं कि द्रोण हुआ था कोई...

द्रोण !
तुम सचमुच हुए थे या नहीं
मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता
लेकिन फिर भी मैं तुम्हें तब से जानता हूँ
जब से पाटी पर बरते से
मेरे पिता मुझे
अ से अनार, आ से आम
क से कबूतर, ख से खरगोश
इकावळी रो एको, दूवै दू आदि बोलना-लिखना सिखाते थे
और ज़िक्र करते थे एकलव्य का..

मैं तुम्हें तब से ही जानता हूँ द्रोण !

हाँ, यह अब समझा हूँ
कि हर पिता की कनपटी के बाल
दक्षिणा की अव्यक्त चाह में ही सफ़ेद होने शुरू होते हैं..
उस सफ़ेदी में शायद
तुम्हीं झलकते हो द्रोण !

स्कूल में
बारहखड़ी और पहाड़े सीखते-सीखते

Scanned with CamScanner

प्रतिदिन जब दोहराया जाने लगा एकलव्य..
तब मैंने तुम्हें थोड़ा और जाना द्रोण !

स्नेह से सिर पर हाथ फेरकर
नित्य 'पढ़ो-लिखो, विद्वान् बनो' कहने वाले
और एकलव्य के साथ-साथ
श्रवणकुमार की भी कथा सुनाने वाले मास्टरजी में
मुझे तुम दिखाई देने लगे द्रोण !

गीड़ भरी आँखों व दुर्गन्ध मारते मुँह से
मेरे मूर्ख होने का उपहास करने वाले
और एकलव्य के साथ-साथ
द्रोपदी के चीर-हरण की घटना सुनाने वाले मास्टरजी में भी
मुझे तुम्हीं नज़र आते थे द्रोण !

स्कूल से जब मैं कालेज गया
तब भी तुम मेरे साथ रहे...
कक्षाओं, पुस्तकालयों और बड़े गुरुओं के घरों के
ट्यूशन पढ़ाने के लिए सजे विशेष कमरों में
मुझे तुम्हीं आते-जाते दिखाई देते रहे द्रोण !

भाँति-भाँति के गुरु लोगों की
भाँति-भाँति की पोशाकों
टाइयों, घड़ियों, जूतों
और सिगरेटकेसों के साथ-साथ
लेब के बाहर पड़ी खाली बोतलों के आस-पास भी
चिन्तातुर-से खड़े
मुझे तुम ही दिखाई देते थे द्रोण !

Scanned with CamScanner

रातों को पढ़ते-पढ़ते
जब मैं निढ़ाल हो जाता था
तो अधबुझी बीड़ियों को सुलगाने के बाद
मेरे पास से शायद तुम्हीं गुजरते थे द्रोण !

इन बरसों में इतना ज़रूर होता रहा
कि मैं जब-जब भी पाता था तुम्हें
अपनी हस्ती के नज़दीक
अपना अँगूठा छुपा लिया करता था...

और...

उन दिनों में
जब हाथ खाली थे...
पेट के इस चूल्हे तक कोई सड़क नहीं जाती थी
और मैं
जीवन-लीला समाप्त करने के बारे में सोचा करता था...
तुम बार-बार मेरे पास से गुज़रते थे
लेकिन कहते कुछ न थे द्रोण !

एक अवसाद में डूबी शाम को
तुम आए मेरे पास...

आज तुम ठहर गए थे...
मैंने घबराकर अपना अँगूठा छुपाया...
मौन के एक घने बादल के
छाती पर से छँट जाने के बाद
जैसे गूँजता हुआ-सा कोई कुआँ बोला -
मैं वैसा नहीं
जैसा तुम समझते आए हो...

Scanned with CamScanner

सच तो यह है
कि जाने कब, किसकी क़लम ने
अपनी कल्पना के सहारे
काल की काली स्याही से
सभ्यता के ताड़पत्र पर
लिखे कुछ शब्द
और ठूँस दिया मेरे मुँह में एकलव्य का अँगूठा...
कर दिया मुँह बन्द सदा के लिए...

कहने आया हूँ अब
कि कोई तो बने एक और द्रोण
और लगाकर गले कहे संसार के सभी एकलव्यों से
कि द्रोण वैसा नहीं था
जैसा तुम सुनते आए हो
समझते आए हो..

तुमने कहा था द्रोण
कि जब तक लोगों के दिल में एकलव्य के साथ मैं
ज़िन्दा हूँ
मेरी मुक्ति सम्भव नहीं है
इसलिए जन्मना होगा एक और द्रोण को
संसार को यह बताने के लिए
कि मेरे मुँह में एकलव्य का
है जो यह अँगूठा
मेरा दक्षिणा में माँगा हुआ नहीं है
किसी का ठूँसा हुआ है...

तुम झूठे हो या सच्चे हो द्रोण !
प्रायश्चित्त चाहते हो

Scanned with CamScanner

या चाहते हो विस्फोट सत्य का
मैं नहीं जानता...

तुम्हारे मुँह में ठुँसे हुए
इस अँगूठे के बारे में
मैं अब भी
निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता..
लेकिन इतना कह सकता हूँ कि
अगर मैं हूँ कोई एकलव्य
तो इस युग के किसी भी द्रोण को
नहीं दूँगा अपना अँगूठा दक्षिणा में...

यदि बनना हुआ मेरा द्रोण कभी
तो ओढ़कर चादर तुम्हारे नाम की
किसी से न माँगूँगा अँगूठा...

हाँ, तुम्हारे उन नपुंसक संस्करणों से
ज़रूर चलती रहेगी मेरी लड़ाई
जो दक्षिणा के नाम पर काटते हैं ज़बानें
छोटे-छोटे बच्चों की..

मैं अपनी लड़ाई अवश्य जीतूँगा द्रोण
अवश्य...

हो सकता है इस लड़ाई में
तुम्हारे मुँह में ठूँसा हुआ
एकलव्य का अँगूठा भी
निकलकर गिर पड़े ज़मीन पर...!

———

Scanned with CamScanner

मैं एक हरिण और तुम इंसान

भोला हूँ
सच ही भोला
तभी तो दौड़ रहा हूँ युगों से
पीछे मरीचिका के...

तुम
जो कहते हो ख़ुद को सयाना
तो तुम क्यों दौड़ रहे हो...
क्यों...

घने जंगलों से निकलकर
सीधी करते हुए रीढ़
बन जाना
तुम्हारा चौपाये से दोपाया
क्या किसी मरीचिका के पीछे दौड़ने से कम था..

कच्चे माँस के लिए
लड़-लड़कर मर जाने की जिद से लेकर
मेरे भुने हुए स्वादिष्ट माँस को
अँगुलियाँ चाट-चाटकर खाने तक का
तुम्हारा लाखों वर्षों का सफ़र
क्या लाया है तुम्हें किसी अन्त तक..

यदि नहीं..
तो अब भी दौड़ ही रहे हो तुम

Scanned with CamScanner

पीछे मरीचिका के..

मरीचिका मेरी
इस भोले हरिण की ही नहीं
हर जीव की नियति है
कोई भोला होकर इसके पीछे दौड़ता है
तो कोई सयाना होकर इसके पीछे दौड़ता है...

मरीचिका मेरा
किसी जीव विशेष का ही नहीं
हर जीव का बन्धन है
तुम्हारा भी..

तभी तो कोई राजा
कोई मर्यादा पुरुषोत्तम
निर्वासन में साथ निभाने आई
अपनी रानी के संकेत मात्र को
ढालकर अपने तीर में
तत्क्षण दौड़ पड़ा था पीछे मेरे..
जिसके भरे-पूरे अट्टहास से
थर्रा उठे थे
वन के पहाड़ भी...

तभी तो कोई महाराजा
स्वयं के दम्भ
और गोरों की दासता के होकर वशीभूत
मसलता था
मेरी प्यारी मोथिया घास को
अपने घोड़ों और हाथियों के सहारे...
करता था मेरा शिकार...

Scanned with CamScanner

और भी सुनो...

वर्जनाओं को तोड़ने के लिए
शहर से भागकर आने वाली बालाओं के सान्निध्य में
मुझे भूनकर खाने की चाह रखने वाले
उस आप जैसे ही इंसान ने
दौड़ाते-दौड़ाते
मार डाला मुझे अपनी बन्दूक से...

कच्चे माँस से
भुने हुए माँस
और भुने हुए माँस से
तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों तक...
नग्नता से
पेड़ों के छाल-पत्तों
और पेड़ों के छाल-पत्तों से
सिले हुए रंगीन वस्त्रों तक...
खुले आसमान से
अँधेरी गुफाओं
और अँधेरी गुफाओं से
ऊँचे-सजे महलों तक...
संकेतों से
जीव-जंतुओं जैसी आवाज़ों
और जीव-जंतुओं जैसी आवाज़ों से
सधे हुए कविता के छन्दों तक..
कब रहे हो तुम
मुक्त मरीचिकाओं से ?

Scanned with CamScanner

तुम्हारे बनाए हुए अभयारण्य में
कल तूफान में मरे सैंकड़ों हरिणों में से एक मैं
पूछता हूँ
संसार के उन समस्त मूक प्राणियों की ओर से
जो होते आए हैं शिकार
तुम्हारी मरीचिका के...
कि क्यों बनाए तुमने अभयारण्य...

अभयारण्य
जहाँ न अभय है
न अरण्य...
है तो केवल भय
केवल दायरे...

आज न होते क़ैद हरिण
तुम्हारे बनाए अभयारण्य में
तो भाग जाते कुलाँचें भरते
उन्हीं धोरों के बीच
जिन्हें समझते रहे हैं वे सागर अब तक..

हमारा जो भी हो
किन्तु तुम लोग
जो डरे हुए हो
भीड़ से घिरे हुए हो...
कहते हो स्वयं को निडर
स्वयं को स्वतन्त्र...
कब होओगे मुक्त
अपने ही बनाए हुए अभयारण्यों से
अपनी ही पैदा की हुई मरीचिकाओं से !

———

Scanned with CamScanner

चवन्नियाँ

बचपन का भी
वह क्या ज़माना था
ना मैं भोला था
ना सयाना था

आपको क्या बताऊँ
कि घर में पला था मैं
कितने प्यार से
दिन में
कम से कम दस बार
मार खाता था
पिताजी थानेदार से

और...

स्कूल का असर देखिए
कि भरी दुपहरी में
बाँग लगाने का अभ्यास
अभी तक मैंने छोड़ा नहीं है
क्योंकि कक्षा में
सबसे अधिक बार
मुर्गा बनने का मेरा रिकार्ड
आज तक
किसी ने तोड़ा नहीं है

Scanned with CamScanner

गुरुजन रोज़ कहते थे
कि कुएँ में ही भाँग पड़ गई है
फलाणचन्दजी की
चौथी औलाद भी बिगड़ गई है

एक चवन्नी के लिए
मैं अकसर माँ से झगड़ा करता था
मिल जाती तो ठीक
नहीं तो
इस सिर को
भाठे से रगड़ा करता था

चवन्नी
उस ज़माने में
बहुत बड़ी चीज़ थी
क्योंकि
उसका हिसाब देना पड़ता था

जब कभी मैं मन्दिर जाता
तो प्रभु को करता प्रणाम् दहाड़ के
हे जगत के स्वामी
चप्पलें ही चुराता रहूँगा
या देगा कभी छप्पर फाड़ के

छप्पर फाड़ के देना -
इस मुहावरे का प्रयोग
दसवीं की परीक्षा में भी
मैंने इसी तरह किया था

आख़िर एक दिन

Scanned with CamScanner

भाग्य ने पलटा खाया
पड़ोसी के घर में
नया किराएदार आया
ठीक एक हफ़्ते बाद
उसने बड़े प्यार से
मुझे अपने पास बुलाया

'चवन्नी लोगे...'
'दोगे...'
'ज़रूर, पर काम ज़रा मुश्किल है...'
'मेरा भी शेर का-सा दिल है...'
'यह बात है...'
'हाँ, यही बात है...'

'तो देख, सामने वह जो दो-मंज़िला घर है..'
'मुझे सारी गली की ख़बर है...'
'उसमें जो मोटे-से अंकल रहते हैं...'
'लोग उन्हें जोरू का ग़ुलाम कहते हैं...'

'तो ले ये लैटर
उन मोटे-से अंकल की
पतली-सी बीवी को दे आ
और लगे हाथ
ज़रा होशियारी से
ज़वाब भी ले आ...'

आपकी क़सम
सच कहता हूँ
ख़ूब मौज हो गई
कुछ ही दिनों में

Scanned with CamScanner

मेरे पीछे
दोस्तों की फ़ौज हो गई

माँ कहने लगी
यह छोरा मोटा कैसे हो गया
पाव का गिलास था
सेर का लोटा कैसे हो गया

छठे महीने
दिन की कई-कई चवन्नियों का
ख़ूबसूरत सिलसिला टूट गया
एक दिन
मेरे नियोक्ता का भाण्डा फूट गया

पिताजी थानेदार ने
विधि-विधान से
मेरी वह की पूजा
कि मेरा मुँह
अब भी रहता है सूजा

माँ छाती कूट-कूटकर बोली
पूत नहीं है तू
तू धरती पर है भार
रे, कुल के कलंक
अगर चवन्नी चाहिए
तो ज़िन्दगी में
कर कोई चमत्कार

इसी घड़ी
तू इस नाजोगे पड़ोसी

Scanned with CamScanner

और चवन्नी के लालच को छोड़
उतने ही पाँव पसारना सीख
जितनी लम्बी है सोड़

देख, उन शर्माजी के बेटे को
जो है सबके मन का हार
भाषण में नित ही
वह जीत-जीत लाता पुरस्कार

माँ के आँसुओं में
जैसे पाप सारे घुल गए
और हिचकियों के साथ
मेरे ज्ञान-चक्षु भी खुल गए

उस रात जागा मैं सुबह तक
किया देवी शारदा का जाप
तू शक्ति दे माँ
बनकर दिखाऊँगा
शर्माजी के बेटे का बाप

उन्हीं दिनों स्कूल में
एक आशु भाषण प्रतियोगिता की
हो रही तैयारी थी
जिसकी जो प्रभारी थी
बहुत भली एक नारी थी

उन दिनों भली नारी का
बहुत महत्त्व था
क्योंकि घरों में
टीवी नहीं हुआ करते थे

Scanned with CamScanner

विनम्र दिखाई देने की
पूरी प्रैक्टिस करके
मैं उस भली नारी के पास गया -
'बोलूँगा मैं, दो मौक़ा...'
'अरे, क्यों देता है ख़ुद को धोखा'

'बोलना तो मुझे है मैडमजी
इस डील में ज़ोर नहीं है कम जी'

'बहुत कठिन है
भाषण देना आशु
तेरी आँखों में
आ जाएँगे आँसू'

मैं रोया-धोया
उनके चरणों में सोया
अभिनय आता था जो
सब उनको दिखा दिया
आख़िर नाम अपना
प्रतियोगियों की
लिस्ट में लिखा दिया

वह दिन भी आया
जब स्कूल के प्रांगण में
महफ़िल सज गई
मेरा नाम पुकारने के साथ ही
पंडाल में
ज़ोरदार ताली बज गई

Scanned with CamScanner

मैं भी कौनसा कम था
पूरा ही तन गया
पाँव रोपकर अपना
अंगद जैसा बन गया

जैसे ही मैंने पर्ची खोली
विषय देखा तो
खोपड़ी में चल गई गोली

पर्ची में लिखे वे छह शब्द पढ़े
तो दिमाग़ सवा सौ डिग्री बुखार में गया
मेरा विषय था
'जब मैं अंतिम संस्कार में गया..'

आँखों के आगे
अँधेरा-सा छा गया
किंतु जल्द ही
मुझे होश आ गया

मैंने कहा -
मित्रो
देखा नहीं अब तक मैंने
किसी चिता का धुआँ है
क्योंकि मुझे आज तक
एक भी अन्तिम संस्कार में
जाने का सौभाग्य
प्राप्त नहीं हुआ है

मैं तो केवल
सगाई-ब्याह और जन्मदिन की पार्टियों में

Scanned with CamScanner

जीमने जाता हूँ
चूँकि मुझे शर्माजी के
बेटे का बाप बनना है
इसलिए
अपने ही अंतिम संस्कार की
कहानी सुनाता हूँ

हुआ यूँ
कि एक दिन मैं मर गया
बिना ब्याह बरात का
इन्तज़ाम कर गया

घर के आँगन में बेटे की लाश
वज्रपात की घड़ी थी
पिताजी थानेदार रो रहे थे
और माँ अचेत पड़ी थी

पूरी कहानी सुनाऊँगा
आप अपने घर कैसे जाएँगे
ये रास्ते सारे
आँसुओं से भर जाएँगे

पूरा एलबम छोड़ो
इंसान की संवेदनहीनता का
एक ही चित्र काफी है
सच कह दूँ तो सब नंगे हो जाएँगे
और ना कहूँ
तो नाइंसाफ़ी है

मैंने मेरी लाश को देखा

Scanned with CamScanner

जैसे चवन्नियों का ढेर थी
इसे उठाने में
अभी थोड़ी देर थी

मैंने मुझसे कहा
कि यहाँ घुटन में क्यों पड़ा है
बाहर जाकर देख
गली के नुक्कड़ पे
सारा मुहल्ला खड़ा है
लेकिन
घर के पास
न आने के लिए अड़ा है

लोग बातें कर रहे थे
कि अभी बहुत देर लगेगी
अरथी को सजाने में
किसी ने मारा है
या ख़ुद मरा है
चलो, चलकर ख़बर करें थाने में

एक भले आदमी ने
थूका पान का पीक
बोला कि बिना बात
बतंगड़ बनाना नहीं है ठीक

यह दिन तो सबके जीवन में आना है
हम आप मरें
या घरवाले ही मार डालें
क्या ठिकाना है

Scanned with CamScanner

हाँ, मेरी मानो तो
यह तमाशा दूर से देखो
पास जाने से कटे रहो
लाश जब तक उठाई जाए
तब तक यहीं
नुक्कड़ पर डटे रहो

अरे, आना यहाँ कौन चाहता है
सबकी मज़बूरी है
मुहल्ले में बैठे हैं
इसलिए सूरत दिखाना ज़रूरी है

ना चाहते हुए भी
लोग गर्दन हिला रहे थे
लेकिन सबको
अपने ज़रूरी काम याद आ रहे थे

कुछ ही मिनटों में
सबकी समस्या हल हुई
मेरे घर के दरवाज़े पर
हलचल हुई

लोग जैसे नींद से जागे
मुहल्ले की मेरी
दादियाँ, ताइयाँ, चाचियाँ, भाभियाँ
जाने किस कोने से
निकलकर आईं आगे

महिलाओं में से एक
मुँह पर पल्लू खेंचकर

Scanned with CamScanner

ज़ोर से बोली
अब हमें एक झुण्ड में
हो लेना चाहिए
बच्चे के नाम पर दहाड़ मारकर
रो लेना चाहिए

कहानी पूरी हुई
मैंने सदन को देकर धन्यवाद
किया नमस्कार
मेरी अंत्येष्टि देखूँ, ना देखूँ
देख लिया
संवेदना का अन्तिम संस्कार..!

———

Scanned with CamScanner

सुरेन्द्र डी. सोनी

जन्मा हूँ मरुभूमि की गोद में स्थित राजस्थान के चूरू ज़िले के गाँव ताल छापर में। जन्म-तिथि 15 अक्टूबर 1965। सुरेन्द्र डी. सोनी नाम है। कभी 'आनन्द' नाम से लिखा, कभी किसी और नाम से...! पाँचवीं कक्षा में अध्यापकों की आपसी बातचीत से समझ में आया कि मैं बड़ा होकर लिखूँगा। लिखना क्या होता है, तब भी नहीं जानता था और आज भी नहीं जानता हूँ...। वक़्त गुज़रने के साथ-साथ यह ज़रूर लगने लगा कि अकेले बैठकर काग़ज़ पर क़लम से अपनी भावनाओं के शब्द-चित्र उकेरना मेरी फ़ितरत हो गई है और अगर यही 'लिखना' है...तो इसके बिना मैं रह नहीं सकता। यह कहना भी बहुत कठिन है कि बाहर का 'मैं' और भीतर का 'मेरा रचनाकार' एक-दूसरे के प्रति कितने ईमानदार हैं...! इतना ज़रूर है कि मैं अपने भीतर सदैव एक तीव्र विक्षोभ महसूस करता आया हूँ। इतनी क्षमता नहीं थी कि मैं इस विक्षोभ को किसी विद्रोह या क्रांति में बदल सकूँ, इसलिए मेरे बिखर जाने की पूरी सम्भावना थी। मुझे जिसने बिखरने से बचाया, वह थी कविता...। इसके आगे मैं क्या कहूँ...?

सरकारी मुलाज़िम हूँ। इस समय लोहिया कालेज, चूरू में नई पीढ़ी को इतिहास पढ़ाने के ज़िम्मेदार लोगों में से एक मैं भी हूँ।

जुड़ना चाहें तो मोबाइल नम्बर 09414465181 पर बात कर सकते हैं, soni.sd@gmail.com पर मेल कर सकते हैं अथवा श्री प्रेम खण्डेलवाल, एडवोकेट, नया बास, शिवमन्दिर, चूरू, राजस्थान-331001 के पते पर चिट्ठी लिख सकते हैं...।

₹ 70.00

ISBN : 978-93-82452-23-2

बोधि जन संस्करण
आवरण चित्र : कुँअर रवीन्द्र

मैं एक हरिण और तुम इंसान

सुरेन्द्र डी. सोनी

Scanned with CamScanner